AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 02| March 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 92-98

जशपुर जिले के पहाड़ी कोरवा जनजाति का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. रामानुज प्रताप सिंह धुर्वे
सहायक प्राध्यापक
शासकीय बाला साहेब देशपाण्डे महाविद्यालय
कुनकुरी जिला-जशपुर (छ.ग.)

~~~~~~

सारांश:

छत्तीसगढ़ की विशेष विषय जनजाति पहाड़ी कोरवा छत्तीसगढ़ के उत्तर पूर्व व उत्तर में स्थित जिलों में पाई जाती है। यह जनजाति आधुनिकता से दूर घने जंगलों में निवास करती हैं। भारत में निवास करने वाली जनजातियां भारत के प्राचीनतम निवासियों में से एक है। भारत की जनजातियां उन मानव समुदायों में से हैं जो विकास की दौड़ में थोड़ा पीछे रह गए और आज भी प्रचीनतम रुप में पाये जाते है। छत्तीसगढ़ जनजातीय बहुल राज्य हैं छत्तीसगढ़ में कुल 42 जन जातियां पाई जाती है जिनमें से 7 जनजातियों को छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित किया गया है इन्हीं जनजातियों में से एक है पहाड़ी कोरवा जनजाति।

प्रस्तावना:

वन और खनिज संपदा से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ अपनी विशिष्ट जनजाति पहचान के लिए जाना जाता है छत्तीसगढ़ की एक तिहाई जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों की है। इन्हें आदिवासी गिरिजन वनवासी इंडीजीनस आदि कई नामों से जाना जाता है। भारतीय संविधान में इन आदिवासियों को अनुसूचित जनजाति के नाम से संबोधित किया गया है। विभिन्न इतिहासकार और मानव शास्त्री का मानना है कि यह आदिवासी समुदाय भारत के प्राचीन निवासी हैं जो विकास की दौड़ में किन्ही कारणों से पीछे रह गए और विभिन्न परिस्थितियों में यह जंगलों में निवास करने लगे। प्रकृति के गोद में रचे बसे

इन आदिवासी समुदायों ने छत्तीसगढ़ की विशिष्ट जनजाति पहचान बनाई है। छत्तीसगढ़ में गोंड, हल्बा, कमार, भैना, उरांव, पांडो आदि अनेक जनजातियां पाई जाती है। जशपुर जिला छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Ramanuj Pratap Singh Dhurve Asst. Professor - Dept. of History Govt. Bala Saheb Deshpande College, Kunkuri, Dist. Jashpur , Chattisgarh Email: r4ramanuj.singh@gmail.com	
~~~~~~

वाला जिला है। जशपुर जिला छत्तीसगढ़ के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है यहां की कुल जनसंख्या 851,669 है। यहां की जनजाति जनसंख्या 535,529 है जो की कुल जनसंख्या का 62.88 प्रतिशत है। जशपुर जिले में उराव, नागेशिया, पहाड़ी कोरवा, गोंड, खड़िया, कमार, भुईहर, खैरवार, बिरहोर, असुर, मुंडा आदि जनजातियां पाई जाती है। जशपुर जिला अपनी विशिष्ट जनजातीय पहचान के लिए जाना जाता है। यहॉ पायी जाने वाली पहाड़ी कोरवा जनजाति छत्तीसगढ की विशेष पिछडी जनजाति में शामिल है।

जशपुर जिले का परिचय:

झारखंड और ओडिशा की सीमा से सटा जशपुर छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर-पूर्वी कोने में स्थित है। जशपुर नगर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। ब्रिटिश राज के दौरान जशपुर शहर जशपुर राज्य की राजधानी थी, जो पूर्वी राज्य एजेंसी की रियासतों में से एक थी। इस क्षेत्र का इतिहास काफी अस्पष्ट है। यहां के स्थानीय लोगों का कहना है कि 18 वीं शताब्दी के मध्य तक इस क्षेत्र पर एक डोम राजवंश शासन कर रहा था। अंतिम डोम शासक रायभान को वर्तमान जशपुर राज्य के संस्थापक सुजान राय ने हराया और मार डाला। ऐसा कहा जाता है कि बांसवाड़ा, पुराने राजपूताना प्रांत का एक छोटा राज्य, सुजान राय के वंश का मूल स्थान था। उन्होंने सोनपुर में अपना शासन और राज्य स्थापित किया। सूर्यवंशी राजा के सबसे बड़े पुत्र सुजान राय गहरे जंगल में शिकार अभियान पर थे, उनके पिता (राजा) की मृत्यु हो गई। इस अवसर पर उनके छोटे भाई का राज्याभिषेक किया गया, क्योंकि राजा के सिंहासन को कुछ समय के लिए भी खाली नहीं रखा जा सकता था। शिकार अभियान से लौटने पर, सुजान राय को सिंहासन पेशकश की गई और सिंहासन का प्रभार लेने का अनुरोध किया गया। लेकिन उन्होंने एक सन्यासी बनना पसंद किया और जंगल में चले गए। घूमते-घूमते वह डोम साम्राज्य के राजधानी खुडिया पहुंचे। वहां उन्होंने पाया कि डोम राजा से प्रजा नाखुश और असंतुष्ट थी और विद्रोह के कगार पर थी। सुजान राय ने लोकप्रिय विद्रोह का नेतृत्व किया, एक युद्ध में डोम राजा को हराया। अब, सुजान राय राजा बने और उनके द्वारा एक नए राज्य जशपुर की स्थापना की गई।[1] आजादी के बाद जशपुर को रायगढ़ जिले का हिस्सा बनाया गया। 25 मई 1998 को जशपुर नये जिले के रुप में अस्तिव में आया।

निवास स्थान:

छत्तीसगढ़ में पहाड़ी कोरवा जो विशेष पिछड़ी जनजाति में सम्मिलित है यह जनजाति मुख्य रुप से छत्तीसगढ़ व झारखण्ड के सीमावर्ती जिलों जशपुर, बलरामपुर, तथा सरगुजा जिले में निवासरत है। इसके अतरिक्त यह अल्प संख्या में कोरबा जिले में भी पायी जाती है। सर्वेक्षण वर्ष 2005-06 के अनुसार इनकी कुल जनसंख्या 34122 थी। वर्तमान में इनकी जनसंख्या बढ़कर लगभग 40 हजार से अधिक हो गई है। जशपुर जिले में पहाड़ी कोरवा जनजति जशपुर, बगीचा, कुनकुरी, दुलदुला, कांसाबेल, फरसाबहार व मनोरा तहसील में निवास करती है। बगीचा तहसील में सन्ना व पंडरापाट में पहाड़ी कोरवा जनजाति के कई गॉव है। इस क्षेत्र की सभी जनजाति कोरवा बैगा को ही अधिक मानती है। जशपुर रियासत में दो जमींदारियॉ कोरवा आदिवासीयों के पास थी जिनमें से एक खुडिया जमींदार जशपुर रियासत का वंशानुगत दीवान था। पहाड़ी कोरवा जनजाति के लोग खुडिया जमींदार को अपना मुखिया मानते है।[2]

पहाड़ी कोरवा जनजाति की उत्पत्ति:

पहाड़ी कोरवा जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। डॉल्टन ने इन्हें कोलारियन समूह से निकली जाति माना है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में अपनी उत्पत्ति को लेकर अनेक कथायें प्रचलित में है। दंतकथाओं के आधार पर कुछ पहाड़ी कोरवा जनजाति अपनी उत्पत्ति राम-सीता व लक्ष्मण से मानते हैं। इस कथा के अनुसार वनवास के समय राम-सीता व लक्ष्मण कुछ समय सरगुजा राज्य में निवासरत थे। इस अवधि में राम-सीता व लक्ष्मण धान के एक खेत के पास से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि पशु-पक्षियों से फसल की सुरक्षा हेतु एक मानवाकार पुतले को धनुष-बाण पकड़ाकर खेत के मेड़ में खड़ा कर दिया गया था। सीता जी के मन में उस पुतले को जीवित करने की युक्ति सूझी। उन्होंने राम से उस पुतले को जीवन प्रदान करने का निवेदन किया। राम ने पुतले को मनुष्य बना दिया यही पुतले से बना वयक्ति कोरवा जनजाति का पूर्वज था।[3]

एक अन्य मान्यता के अनुसार पहाड़ी कोरवा जनजाति अपनी उत्पत्ति शंकर जी से मानती है। पहाड़ी कोरवा जनजाति कि कथाओं के अनुसार शंकर जी ने सृष्टि का निर्माण किया। तत्पश्चात् उन्होंने सृष्टि की सुरक्षा व सृष्टि की सुंदरता बढ़ाने के लिए मनुष्य उत्पन्न करने का विचार किया। इस विचार के उपरांत उन्होंने रतनपुर राज्य के काला और बाला पर्वत से मिट्टी लेकर दो मनुष्य बनाये। काला पर्वत की मिट्टी से बने मानव का नाम कइला तथा बाला पर्वत की मिट्टी से बने हुये मानव का नाम घुमा रखा। तत्पश्चात् शंकर जी ने दो नारी मूर्तियों का भी निर्माण किया जिनका नाम सिद्धि तथा बुद्धि था। कइला ने सिद्धि के साथ विवाह किया, जिनसे तीन संतानें हुई पहले पुत्र का नाम कोल, दूसरे पुत्र का नाम कोरवा तथा तीसरे पुत्र का नाम कोरकू हुआ। कोरवा के भी दो पुत्र हुये। एक पुत्र पहाड़ में जाकर जंगलों को काटकर दहिया खेती करने लगा, पहाड़ी कोरवा कहलाया। दूसरा पुत्र जंगल को साफ कर हल के द्वारा स्थाई कृषि करने लगा वह डिहारी कोरवा कहलाया।[4]

पहाड़ी कोरवा जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में अनेक कहानियॉ प्रचलन में है जो निम्नानुसार है पहाड़ी कोरवा जनजाति के उत्पत्ति के कथा के अनुसार एक बार महादेव और पार्वती ने जंगल के के कुछ वनों को काटकर जला दिया जिसे कोरवा बोली में दहिया कहते हैं इस जमीन में उन्होंने धान बोया धान को जंगली जानवर नष्ट ना कर सके इस उपाय के लिए महादेव और पार्वती ने एक पुतले की रचना की और उसे शस्त्र के रूप में तीर और धनुष पकड़ा कर खेत के मध्य में स्थापित कर दिया। इसके पश्चात महादेव और पार्वती अन्य स्थान को चले गये। जब मौसम बदला जब फसल के पकने का समय आया तब महादेव व पार्वती वापस लौटे और खेत में लहराते हुए धान की फसल को देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुए। उन्हें इस बात की अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि उस पुतले के कारण धान की फसल को किसी जंगली जानवर ने नुकसान नहीं पहुंचाया जब धान की फसल तैयार हो गई और उसे काट दिया गया तब पार्वती ने महादेव से निवेदन किया जिस पुतले के कारण उसके धान की फसल सुरक्षित रह पाई थी उस पुतले में जान फूंक दिया जाए। यह सुनकर महादेव ने कहा कि अगर उस पुतले में जान फूंक देते हैं तो वह तीर धनुष से सबको हानि पहुंचा सकता है परंतु पार्वती के बार-बार निवेदन और जिद के कारण महादेव को उस पुतले में जान डालना पड़ाता हैं। वह पुतला जीवित मनुष्य के रूप में धनुष

बाण के साथ महादेव और पार्वती के समक्ष खड़ा हो गया। महादेव ने कहा तुम ने मेरे खेत और फसल की रक्षा जानवरों से का-अ-वा-को-वा की ध्वनि करते हुए है। का-अ-वा-को-वा ध्वनि अर्थ होता है एक आदमी है.......... भागो। इसलिए तुम्हें आज से कोरवा नाम से जाना जाएगा अब तुम जाओ और जंगल में निवास करो। इस तरह कोरवा जनजाति का पहला आदि पुरुष धरती में अवतरित हुआ।[5]

पहाड़ी कोरवा के उत्पत्ति को लेकर एक अन्य सिद्धांत डाल्टन द्वारा लिखित ग्रंथ डिस्क्रिप्टिव इथनोलॉजी ऑफ बंगाल में मिलता है इस कथा के अनुसार कोरवा जनजाति का उत्पत्ति सरगुजा में हुई है। कथा के अनुसार वर्तमान सरगुजा राज्य में पहले घनघोर जंगल हुआ करता था। इस सरगुजा राज्य में जो पहला मानव था। वह जंगली जानवरों से बहुत ही परेशान रहता था क्योंकि जंगली जानवर उसके खेत को नष्ट कर देते थे। उसने जानवरों को खेतों से दूर रखने के लिए मानव सदृस्य पुतला बनाया और खेत में रख दिया जब जब हवा बहती थी तब तक उसकी उससे ध्वनि निकलती थी और साथ ही पुतले के हिलने-डुलने से जानवर खेत से दूर रहने लगे। इस प्रकार इस पुतले के कारण उसकी पूरी फसल नष्ट होने से बच गई कोरवाओं का मानना है कि एक दैवीय आत्मा यह घटना देख रही थी उसने हिलते डुलटे पुतले को देखा और किसानों की खुशी को देखते हुए उसने पुतले में जान फूंक दी। इस प्रकार दैवीय आत्मा द्वारा जीवित किया हुआ पुतला कोरवाओं का आदिपुरुष बना।[6]

शारीरिक संरचना व पहनावा:

पहाड़ी कोरवा जनजाति छोटा नगपुर क्षेत्र के कोलारियन समुह की प्रमुख जनजाति है। इस जनजाति के लोग छोटे कद , काले रंग तथा मजबुत शारीरिक गठन के होते है। पुरुषों की ऊंचाई सामान्यतः 5 फीट 3 इंच व महिलाओं की ऊंचाई 4 फीट 9 इंच होती है। कोलारियन समुह की समस्त जनजातियों में पहाड़ी कोरवा जनजाति सबसे पिछडी़ अवस्था में है। स्त्रियाँ गिलट के गहने जैसे - हाथ में कड़े ऐंठी, नाक, कान में लकड़ी या गिलट के आभूषण पहनती हैं। पहले पुरूष सामान्यतः कमर के नीचे लंगोटी लगाते या पंछा पहनता थे, शरीर का ऊपरी भाग खुला रहता था। कुछ स्त्रियाँ सिर्फ लुगरा पहनती थी। महिलाओं के साथ साथ पुरूष भी अपने सिर के बालों को लंबा रखते हैं और बालों को पीछे की ओर बाँध लेते हैं। इस जनजाति में बाल संवारने की प्रथा नहीं थी।[7] विशेष पिछडी़ जनजाति में शामिल पहाड़ी कोरवा जनजाति आज भी पुरातन पद्वति से ही जीवन यापन कर रहें है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में मुड़िहार, हसदा, ऐदमे, फरमा, समाउरहला, गोनु, बंडा, इदिनवार, सोनवानी, भुदिवार, बिरबानी आदि गोत्र पाये जाते हैं।

आवास:

पहाड़ी कोरवा जनजाति मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करने वाली जनजाति है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में घर साधारण होता हैं। घर प्रायः एक कमरे या दो कमरे का ही होता है। पहाड़ी कोरवा के घर दो प्रकार के होते हैं। घर मिट्टी की दीवाल व बाँस के बने होते हैं। जिसमें एक केंद्रीय कक्ष होता है और इस केंद्रीय कक्ष के किनारों पर दो या तीन बरामदे होते हैं इसमें खाना बनाने का कक्ष, शयन कक्ष आदि होता है कुछ घरों में कमरे दो भागों में विभाजित होते हैं। घरों के फर्श को काली मिट्टी से पाटा जाता है। वर्तमान में घर मिट्टी का बनाते हैं, जिस पर छप्पर देशी खपरैल का होता है। घर का फर्श मिट्टी

का बना होता है, जिसे 8-10 दिन में एक बार मिट्टी या गोबर से लीपते हैं। कोरवा जनजाति में घर का एक और प्रकार पाया जाता है इससे कुंबा कहा जाता है यह एक छोटी और सरल झोपडी होती है जो आकार में गोल होती है इसकी छत उंची होती है आमतौर पर इसमें छप्पर का उपयोग होता है। छप्पर साल घास या अन्य वनों के पत्तों से बनाया जाता है यह एक एकल कमरे वाला मकान होता है इसमें लकड़ी की बाढ़ से घर की सुरक्षा की जाती है ऐसे झोपड़ियां ज्यादातर जंगल के बीच में या किसी पहाड़ी की तलहटी में होती है घरों की दीवारें टहनियों और मिट्टी से बनी होती है। घरों की दीवारों को गाय के गोबर से लीपा जाता है। पहाड़ी कोरवा जनजाति द्वारा बनाए गए घरों में एक सटा हुआ आंगन होता है जिसे बारी कहते हैं जहां मक्का, साग, सब्जी आदि का उत्पादन किया जाता है। कोरवा जनजाति मिट्टी से बने चूल्हों का ही उपयोग खाना बनाने में करती हैं। पहाड़ी कोरवा जनजाति के गांव में कुओं का अभाव देखा जाता था यह जल के लिए नदियों नालों या तालाबों पर निर्भर रहते थे।[8] घरेलू वस्तुओं में भोजन बनाने का कुछ बर्तन, तीर-धनुष, कुल्हाड़ी, कुछ बाँस के टोकरे आदि होते हैं।

खान-पान:

पहाड़ी कोरवा जनजाति के घर दुर्गम स्थानों में रहता है। इनका मुख्य भोजन जंगली कंदमूल व जानवरों का मांस हैं। इसके अतिरिक्त ये भोजन में कोदो, कुटकी, गोदली की पेज, कभी-कभी चावल की भात ,भाजी व मौसमी सब्जी का सेवन करते है। मांसाहार में मुर्गी, सभी प्रकार के पक्षी, मछली, केकड़ा, बकरा, हिरण, सुअर आदि का मांस खाते हैं। महुआ से शराब बनाकर पीते हैं। प्रकृति में रचे बसे इस आदिवासी समुदाय में खान-पान को लेकर कोई विशेष नियम नहीं है। कुछ विषैले सॉपों को छोडकर कोई भी जंगली जानवर इनका खाद्य है।[9]

आर्थिक जीवन:

इस जनजाति का आर्थिक जीवन मुख्यतः जंगली ऊपज, संकलन, शिकार पर आधारित था। वर्तमान में स्थाई बस कर कोदो-कुटकी, गोदली, धान, मक्का, उड़द, मूँग, कुलथी आदि की खेती करने लगे हैं। असिंचित व पथरीली जमीन होने के कारण उत्पादन बहुत कम होता है, जिनके पास कम कृषि भूमि है, वे अन्य जनजातियों के खेतों में मजदूरी करने जाने लगे हैं। जंगली उपज का एकत्र करते हैं और स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। पुरूष-बच्चे पक्षियों का शिकार तीर-धनुष से करते हैं। पुरूष व महिलाएँ मछली, केकड़ा, घोंघा भी वर्षा ऋतु व अन्य ऋतु में छोटे नदी नाले से पकड़ते हैं। इसे स्वयं खाते हैं। ये बांस की टुकनी, झांपी आदि समानों का विक्रय अन्य जनजातियों को करते है।[10]

जीवन चक्र:

इस जनजाति की गर्भवती महिलाएँ प्रसव के दिन तक सभी आर्थिक तथा पारिवारिक कार्य करती हैं। प्रसव के लिये पत्तों से निर्मित अलग झोंपड़ी बनाते हैं, जिसे ‘‘कुम्बा‘‘ कहते हैं। प्रसव इसी झोपड़ी में स्थानीय दाई जिसे ‘‘डोंगिन ‘‘ कहते हैं की सहायता से कराते हैं। बच्चे का नाल तीर के नोक या चाकू से काटते हैं। नाल झोपड़ी में ही गड़ाते हैं। प्रसूता को हल्दी मिला भात खिलाते हैं। कुलथी, एंठीमुड़ी, छिंद की जड़, सरई छाल, सोंठ-गुड़ से निर्मित काढ़ा भी पिलाते हैं। छठें दिन छठी मनाते हैं, बच्चे तथा माता को नहलाकर सूरज, धरती व कुल देवी को प्रणाम कराते हैं। महुआ से निर्मित शराब मित्रों को पिलाते हैं।[11]

विवाह संस्कार:

पहाडी़ कोरवा जनजाति में पहले कम उम्र में विवाह की प्रथा पायी जाति थी। लड़कों का विवाह 15 वर्ष और लडक़ियों का विवाह 13-14 वर्ष में कर दिया जाता था। विवाह का प्रस्ताव वर पक्ष की ओर से होता है। विवाह में अनाज, दाल, तेल, गुड़ कुछ रूपये वधू के पिता को ‘‘सुखसरहा‘‘ के रूप में दिया जाता है। विवाह में मांगभरा प्रमुख रस्म है जो बैगा व जाति का मुखिया संपन्न कराता है। इनमें ‘‘गुरावट‘‘ (विनिमय), ‘‘लमसेना‘‘ (सेवा विवाह), ‘‘पैठू‘‘ (घुसपैठ), ‘‘उढ़रिया‘‘ (सहपलायन) आदि विवाह भी पाया जाता है। पहाडी़ कोरवा जनजाति में गोड़ जनजाति की तरह अपने मामा व बुआ के बच्चों से विवाह की प्रथा पायी जाती है।[12]

मृतक संस्कार:

पहाडी़ कोरवा जनजाति में मृत्यु होने पर मृतक को दफनाते हैं। जिस जगह मृतक को दफनाया जाता वहॉ से कुछ दुरी पर आग जलाकर पितरों के लिये घी और धुप समर्पित करते है। मृत्यु भोज देते हैं। जिस झोंपड़ीं में मृत्यु हुई थी, उसे नष्ट कर नई झोंपड़ी बनाकर रहते हैं। पहाडी़ कोरवा जनजाति में 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को घर या बरगद पेंड के निचे दफनाया जाता ताकि वह पुनः जन्म ले सके।[13]

राजनैतिक संरचना:

इनमें अपनी परम्परागत जाति पंचायत पायी जाती है। कोरवा जनजाति पंचायत का प्रमुख ‘‘मुखिया” कहलाता है। इस पंचायत में पटेल, प्रधान और भाट आदि अन्य पदाधिकारी होते हैं। कई ग्राम मिलकर गठित जाति पंचायत का मुखिया तोलादार कहलाता है। इस पंचायत में वधुमूल्य, विवाह, तलाक, अन्य जाति के साथ विवाह या अनैतिक संबंध आदि मामले निपटाये जाते हैं। जाति के देवी-देवता की पूजा व्यवस्था भी जाति पंचायत द्वारा कराई जाती है।[14]

धार्मिक मान्यतायें:

जशपुर जिले में पहाडी़ कोरवा जनजाति की प्रमुख देवी खुरियारानी है। जशपुर जिले में स्थित खुरियारानी मंदिर इनका प्रमुख तीर्थ स्थल है। यहॉ एक देवी प्रतिमा स्थपित है जो गोंडों की रक्त प्यासी देवी या हिंदू देवी काली के सदृश्य है।[15] इनके अन्य प्रमुख देवी-देवताओं में ठाकुरदेव, शीतलामाता, दुल्हादेव आदि हैं। इसके अतिरिक्त नाग, बाघ, वृक्ष, पहाड़, सूरज, चांद, धरती, नदी आदि को भी देवता मानकर पूजा करते हैं। पूजा के अवसर पर मुर्गे की बलि देते हैं व शराब चढ़ाते हैं। इनके प्रमुख त्यौहार दशहरा, नवाखानी, दिवाली, होली आदि है। भूत-प्रेत, जादू-टोना में भी विश्वास करते हैं। इनमें मंत्र जादू के जानकार व्यक्ति देवार बैगा कहलाता है।[16] इस जनजाति के लोग करमा, बिहाव, परघनी, रहस आदि नाचते हैं। लोकगीतों में करमा गीत, बिहाव गीत, फाग आदि प्रमुख हैं। इसकी अपनी विशिष्ट बोली है, जिसे ‘‘कोरवा बोली‘‘ कहते हैं।

निष्कर्ष:

छत्तीसगढ़ की जनजातिय संस्कृति मे जशपुर जिले का विशेष महत्व है। जशपुर जिले में निवास करने वाली पहाड़ी कोरवा जनजाति अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के लिए जानी जाती है। संपूर्ण जशपुर जिला पहाड़ी कोरवा

जनजाति का निवास स्थान है पर विशेष रूप से बगीचा तहसील पहाड़ी कोरवा जनजाति का हृदय स्थल है। विभिन्न देवी-देवताओं से उत्पत्ति का सिद्धांत हो या आवास निर्माण की विशेष व्यवस्था या पहाड़ी कोरवा जनजाति का शांत स्वभाव और इनकी सरल जीवन शैली यह सब विशेषताए पहाड़ी कोरवा जनजाति को इसकी विशिष्ट पहचान दिलाती है। इस कारण यह विशेष पिछड़ी जनजाति में शामिल है जरूरत है तो इनके विकास की ताकि यह अपनी विशष्ट पहचान बनाए रखते हुए विकास के पथ पर अग्रसर हो सके।

संदर्भ सूची:

1) गुप्त प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर ,2018 पृ 268
2) ब्रेट ई. ए. डी., सेंट्रल प्रोविंस गजेटियर, छत्तीसगढ़ फयुडेटरी स्टेट, टाइम प्रेस, बॉम्बे, पृ. 282
3) वैष्णव टी के, छत्तीसगढ. की अनुसूचित जनजातियॉ, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर, 2004, पृ. 69
4) वैष्णव टी के, छत्तीसगढ. की आदिम जनजातियॉ, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर, 2008 पृ. 42
5) शुक्ल हीरालाल, मिश्र रमेन्द्‍नाथ एवं अन्य, समग्र छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर 2017 पृ. 518
6) डाल्टन ई. टी., डीस्क्रीपटीव इथनोलॉजी ऑफ बंगाल, ऑफीस ऑफ दी सुपरिटं‍ेडेंट ऑफ गवर्नमेंट प्रिटिग, पृ 226
7) शर्मा सी. एल. , छत्तीसगढ़ की रियासतें, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर 2008 पृ. 423
8) देवगांवकर एस. जी., दी हिल कोरवा, कॉन्सेप्ट पब्लिसिंग कंपनी, नयी दिल्ली, पृ. 25
9) ब्रिटिशकालीन छत्तीसगढ़ हिंदी गजेटियर भाग-1, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर 2017 पृ. 343
10) वैष्णव टी के, पुर्वोक्त पृ. 73
11) वैष्णव टी के, पुर्वोक्त पृ. 44
12) मेहता पी. सी., मैरिज इन इंडियन सोसायटी, डिस्कवरी पब्लिसिंग हाउस ,नयी दिल्ली ,पृ. 101-109
13) रसल आर. वी व हीरालाल, दी टा‍इब एंड कास्ट आफ दी सेंट्रल प्रोविंस ऑफ इंडिया, भाग 3, मैकमिलन एंड कंपनी, लंदन 1916,पृ. 574-575
14) अलंग संजय, छततीसगढ़ की जनजातियॉ और जातियॉ, मानसी पब्लीकेशन दिल्ली 6 ,पृ. 25
15) डाल्टन ई. टी., पुर्वोक्त पृ .229
16) रसल आर. वी व हीरालाल, पुर्वोक्त पृ. 575

■ ■ ■